पाक्षिक समाचार

सम्पर्क

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली

खण्ड–XXIX अंक–07 15 अप्रैल, 2024

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः। तत्र श्रीविजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।

हे राजन् ! जहाँ योगेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण हैं और जहाँ गाण्डीव धनुषधारी अर्जुन हैं, वहीं पर श्री, विजय, विभूति और अचल नीति है–ऐसा मेरा मत है। **श्रीमद्भगवद्गीता 18/78**

स्वागत

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2024/260099 दिनांक 26.03.2024 के अनुसार **प्रो. प्रतीक दास** ने 20.03.2024 से संस्थान के यांत्रिक इंजीनियरी विभाग में सातवें वेतन आयोग के वेतन लेवल–12 में सहायक प्रोफेसर (ग्रेड-I) के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

  प्रो. प्रतीक दास को उनकी नियुक्ति से तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो, के लिए) संस्थान द्वारा प्रायोजित ''युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप'' भी प्रदान की गई है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2024/259163 दिनांक 22.03.2024 के अनुसार **डॉ. (सुश्री) इनाक्षी नन्दी** ने 15.03.2024 से संस्थान के मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग में अंग्रेजी भाषा अनुदेशक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2024/264386 दिनांक 08.04.2024 के अनुसार **डॉ. पीरू मोहन खान** ने 01.04.2024 से संस्थान के अनुप्रयुक्त यांत्रिक विभाग में पोस्ट–डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-3/2024/264382 दिनांक 08.04.2024 के अनुसार **डॉ. (सुश्री) सौजन्य धूलीपाल** ने 04.04.2024 से संस्थान के परिवहन अनुसंधान एवं चोट रोकथाम केन्द्र (ट्रिप) में पोस्ट–डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2024/264379 दिनांक 08.04.2024 के अनुसार **डॉ. (सुश्री) नयन अधिकारी** ने 03.04.2024 से संस्थान के गणित विभाग में पोस्ट–डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2024/263530 दिनांक 04.04.2024 के अनुसार **डॉ. अमित कुमार प्रधान** ने 01.04.2024 से संस्थान के रसायन विज्ञान विभाग में पोस्ट–डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/Estt.-II/2024/263018 दिनांक 03.04.2024 के अनुसार **श्री विनय कुमार बैरवा** ने 21.03.2024 से संस्थान में सातवें वेतन आयोग के वेतन लेवल–6 में लेखा एवं लेखा परीक्षा अधिकारी के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/Estt.-II/2024/263696 दिनांक 05.04.2024 के अनुसार **सुश्री सैयद साबिया अली** ने 20.03.2024 से संस्थान में सातवें वेतन आयोग के वेतन लेवल–6 में आर्किटेक्ट के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/Estt.-II/2024/263705 दिनांक 05.04.2024 के अनुसार **श्री गिरीराज चार** ने 21.03.2024 से संस्थान में सातवें वेतन आयोग के वेतन लेवल–6 में बागवानी अधिकारी के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

त्यागपत्र स्वीकृत

स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2024//262885 दिनांक 04.04.2024 के अनुसार **प्रो. (सुश्री) शालिनी गुप्ता,** (रासायनिक इंजीनियरी विभाग) ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था। जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 29.02.2024 से स्वीकार कर लिया है। अतः प्रो. (सुश्री) शालिनी गुप्ता, को 29.02.2024 से संस्थान कार्य से मुक्त कर दिया गया है।

आज के डिजिटल युग में पुस्तक का अस्तित्व

भारत में ही नहीं बल्कि विश्व में समस्त बुद्धिजीवी वर्ग पुस्तक के भविष्य को लेकर चिंतित है। आये दिन सेमिनार और गोष्ठियों में यह चर्चा जोर पकड़ रही है की इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के बढ़ते प्रभाव के कारण पुस्तक हाशिए पर चली गई है। पर सवाल ये उठता है कि क्या इलेक्ट्रॉनिक माध्यम पुस्तक की जगह लेंगे या इलेक्ट्रॉनिक के इस युग में भी पुस्तक जिंदा रहेगी ? किताबों के महत्व पर चर्चा करते वक्त किताबों के अस्तित्व पर उठाए गए सवाल पर बीसवीं सदी के महान लेखक बौर्खेज का जवाब खास मायने रखता है कि "पुस्तकों का अस्तित्व कभी नहीं मिटेगा ! मनुष्य के ढेर सारे आविष्कारों में किताबें सर्वाधिक विस्मयकारी आविष्कार है। दूसरी तमाम चीजें हमारे शरीर का विस्तार होती हैं, जैसे टेलीविजन हमारी आवाज का, टेलिस्कोप, माइक्रोस्कोप हमारी दृष्टि का विस्तार है, सिर्फ किताबें ही है जो हमारी कल्पनाओं एवं स्मृतियों को विस्तार देतीं हैं।"

मानव इतिहास में भाषा, अक्षर तथा मुद्रण तीन ऐसे क्रांतिकारी आविष्कार हैं जिन्होंने मानव के विकास को नई दिशा दी है । भाषा के जन्म ने आपसी संवाद को, अक्षर ने स्मृति के संग्रह को संभव बनाया है, परंतु मुद्रण ने ज्ञान के एकाधिकार को समाप्त कर उसका जनतांत्रिकरण कर दिया है । जहां एक ओर मुद्रण के आविष्कार ने किताब को एक विशिष्ट वर्ग के संकीर्ण दायरे से निकालकर सर्वसुलभ कर दिया है । वहीं बीसवीं सदी में इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों के जरिए बढ़ते बाजारवाद में किताबों के भविष्य पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया है। कंप्यूटर और इंटरनेट के घर–घर में पहुंचने से न केवल युवा पीढ़ी बल्कि बच्चों एवं वृद्धों को भी ये माध्यम आकर्षित करने लगते हैं।

आज लगभग सभी वर्ग के घरों से पुस्तकें लगभग लुप्त होती जा रही हैं। अधिकतर वक्त इंटरनेट या संचार माध्यमों में गुजरने लगा है। किसी भी शुभ अवसर पर उपहार स्वरूप ज्ञानवर्धक पुस्तकों पाकर बच्चे इतने खुश नहीं होते जितने इलेक्ट्रॉनिक गैजेट पाकर खुश होते हैं। आधुनिकता की प्रतीक समझी जाने वाली यह उपभोक्ता वस्तुओं पुस्तकों के मुकाबले लोगों को ज्यादा पसंद आने लगी है। इसमें कोई शक नहीं कि कंप्यूटर और अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरण उच्च एवं मध्यम वर्ग के लोगों के जीवन में तेजी से घर करते जा रहे हैं। पर आज भी हमारे देश का बहुत बड़ा वर्ग निरक्षर है । प्रश्न यह है कि इस वर्ग के लोग किस तरह सामाजिक एवं बौद्धिक गतिविधि में शामिल हो सकेंगे उपभोग के साधनों में टेलीविजन, मोबाइल, कंप्यूटर और तमाम अन्य इलेक्ट्रॉनिक गैजेट है, पर पुस्तक नहीं है। इंटरनेट पर ज्ञान एवं सूचना की सारी चीजें आसानी से और तेजी से हासिल की जा सकती हैं। ऐसे में पुस्तकें खरीदने रखने और पढ़ने की तकलीफ क्योंकि जाए ? प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक सभी तरह के प्रचार माध्यमों पर इसी तरह के बाजारवाद ने कब्जा कर लिया है। उनकी प्राथमिकता में पुस्तक की कोई जगह नहीं रहने दी जा रही है। आज इंटरनेट के जरिए घर बैठे दुनिया के किसी भी कोने से जुड़ी जानकारी प्राप्त की जा सकती है। दरअसल, इसमें किताबों को दुकानों तक सीमित न रखकर घर–घर पहुंचा दिया है। बड़े–बड़े विश्वकोश रामायण, महाभारत जैसे ग्रंथ सीडी व डीवीडी में संग्रहित कर दिये गए हैं। इस दृष्टि से तो यही लगता है कि यह प्रौद्योगिकी पुस्तकों की शत्रु नहीं बल्कि सहयोगी है डिजिटल क्रांति के चलते पुस्तक का भविष्य अधिक उत्तेजित एवं संभावना पूर्ण होने की पूरी उम्मीद व्यक्त की जा सकती है । इसके पक्ष में बोलने वालों की यह भी धारणा है कि सूचना क्रांति से होने वाले परिवर्तनों को एक औषधि के रूप में लिया जाना चाहिए ।

बेशक ! इलेक्ट्रॉनिक या सूचना क्रांति से के फायदे अपनी जगह है उससे इनकार नहीं किया जा सकता पर पुस्तकों के उत्पादन की जो मानवीय जरूरत है उसे यांत्रिक उपकरणों से पूरा नहीं किया जा सकता। आज भी मुद्रित शब्दों को अधिक प्रमाणिक और गंभीरता से लिया जाता है क्योंकि इलेक्ट्रॉनिक कवरेज का असर तत्काल और सनसनीखेज तो अवश्य रहता है, पर यह अल्पमत तक ही रहता है। जबकि मुद्रित शब्दों का देर तक और दूरगामी असर होता है। पुस्तकें हमारी चिंतनशीलता को बरकरार रख कर हमें उदार बनाती हैं। शायद, यही वजह है कि विदेशों में कई वर्षों से कंप्यूटर, लैपटॉप, स्मार्ट फोन, टैबलेट आदि घर–घर पहुंचने के बावजूद किताबों के छपने और खपने की प्रक्रिया कभी बंद नहीं हुई। फ्रांस, रूस, ब्रिटेन, यूरोप के कई शहरों में आज भी किताबों को खरीदने के लिए लंबी कतारें देखी जा सकती हैं। विदेशों में भी पुस्तकों की संख्या उतनी ही है जितनी दुकानों की, जहां बड़ी संख्या में पाठक पूरा–पूरा दिन गुजारते हैं।

पुस्तक हाथ में लेते ही विचारों एवं भावनाओं का एक जीवंत संसार खुल जाता है, जिसे ई–बुक से महसूस नहीं किया जा सकता है। पुस्तक सीधे मस्तिस्क को प्रभावित करती हैं इसलिए मनुष्य जीवन पर उसके तत्काल प्रभाव को आना संभव नहीं है। हां, यह जरूर है कि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने ज्ञान एवं सूचना के तमाम विकल्प उपलब्ध कराए हैं उससे किताबों के प्रति लोगों का रुझान घटा है। किताब के विकास के बाद से ही अभिव्यक्ति के कई दूसरे माध्यम निरंतर आते रहे हैं। मुद्रण कला के विकास के साथ किताब फिर फोटोग्राफी, रेडियो चलचित्र, ऑडियो–वीडियो आये। इन सभी के जरिए ज्ञान व सूचना के नए मार्ग खुले। पुस्तक बनाम ई–पुस्तक पर चर्चा कोई नई बात नहीं है। आए दिन तरह–तरह के अनुमान लगाए जाते हैं। इनमें ई–बुक्स के बढ़ते–घटते विक्रय और प्रकाशन संसार में इससे हो रही उथल–पुथल के बारे में बहस होती है। आंकड़े जो भी कहें, मुद्रित पुस्तकों का अस्तित्व और आकर्षण बढ़ा है और आने वाले दिनों में बना ही रहेगा। पुस्तकों का अपना एक अलग महत्व होता है। चाहे कितना भी इंटरनेट की बात कर ली जाए, पुस्तकों का महत्व कम नहीं होगा। आज चूंकि मीडिया से जुड़े तमाम रूप एक साथ उभर रहे हैं, इसलिए किताब के अस्तित्व को लेकर कई आशंकाएं जोर पकड़ने लगी हैं। पर उन तमाम आविष्कारों के किसी भी काल या देश के किताब का महत्व न कभी कम हुआ है, और ना होगा। कोई भी तकनीक ज्ञान या विकास का अंतिम जरिया नहीं होती। हर नए विकास के साथ नए विकल्प उभरते हैं और कुछ पुराने पड़ जाते हैं। बदलते दौर में यह जरूरी है कि किताब एवं किताब के रचनाकार नए रूपों एवं विकल्पों में खुद को ढालें एवं अपनी सार्थकता को बनाए रखने के लिए इस चुनौती को स्वीकारें।

–डॉ. नीरज चौरसिया
केन्द्रीय पुस्तकालय

भारतीय नव वर्ष मंगलमय हो

भारतीय नववर्ष की एक विशेषता यह भी है कि वह कभी नहीं विगत होता, बस स्मृति में बदल जाता है।

भारतीय नववर्ष चैत्र प्रतिपदा 2076 का शुभ दिवस सबके लिए मंगलमय हो। यह वर्षारंभ भारतीय मन के मांगल्य का उत्सव है। यह चैत्र में आम की मंजरियों के सुगंध का प्रसरण है तो अंतर्मन के शोधन का नवरात्र भी। शक्ति की संकल्पना एवं उपासना का सान्निध्य भी। मनुष्य की सात्विकता के निचोड़ के रूप में भारतीय नववर्ष आता है। यह हमारी पारंपारिक एवं शुचिता का आह्लाद है, या हमारी तन्मयता का नम्र निवेदन है। यह हमारे पूर्वजों के कोठार की कथा है। यह अन्याय के विरुद्ध खड़ा होने की मां दुर्गा की गत्यात्मक है। चैत्र मास में रातें छोटी एवं दिन बड़े होने लगते हैं। वृक्ष नई पत्तियों एवं कोपलों का स्वागत करता है। पतझड़ समाप्त होकर बसंत का शुभागम होता है। हरियाली से प्रकृति खिल जाती है और दिन सुशोभन लगने लगते हैं। इतनी सारी नवीनताओं के कारण ही हमारे पुरखों ने नववर्ष की संकल्पना रखी। यह अधिक विज्ञान सम्मत है जो नूतनता को हर क्षण उकेरता है। विक्रम संवत में भारतीय नववर्ष की शुरुआत चंद्रमा के चैत्र से ही होती है। 21 मार्च को पृथ्वी सूर्य का एक चक्कर पूरा कर लेती है और उस समय दिन एवं रात बराबर होते हैं हम नववर्ष का स्वागत भारतीय परंपरा के अनुसार सूर्य की पहली किरण से करते हैं ना कि रात्रि के अंधकार में। यह पश्चिम की दृष्टि से हमारा विपर्यय है।

यह समय दो ऋतुओं का संधिकाल है। ऋतुओं का हमारे भारतीय समाज एवं साहित्य में बड़ा महत्व है। हमारे लोकगीत, हमारे लोक विश्वास, हमारी स्मृति, हमारे व्यवहार में ऋतुओं की घोषित–अघोषित उपस्थिति रहती है। हमारी भाषा, हमारे मुहावरे ऋतुओं को संबोधित करते रहते हैं। पश्चिम में ऋतुओं पर इतना बल नहीं है, इसलिए भी उनसे हमारी दृष्टि भिन्नता है। साल भर की भीड़–भाड़ में जो बात नहीं सुन पाते, जो छवियों बारहों महीने नहीं संयुक्त हो पातीं, नववर्ष उनको एकाग्र कर देता है। वह यह भी जतलाता है कि पूर्व समय में हमने क्या ग्रहण किया, क्या

अस्वीकार किया, क्या समंजन संभव हुआ और मार्मिकता का संवेग अपनाया।

भारतीय नववर्ष हमारी आशा की सहयोजना है, संकल्पों का मंत्रोत्सव है। नववर्ष बताता है कि परिवर्तन अवश्यंभावी है, लेकिन उसे जीवन का निर्णायक मोड़ कैसे बनाया जा सकता है। आगामी जीवन में मधुरता कैसे लाई जा सकती है। यह 'कोई भी दिन' नहीं है, यहां सात्विक विचारणा का दिन है। यह कैलेंडर की एक नई तारीख नहीं है, हमारी गतिशीलता का खुलता हुआ नया उज्जवल पक्ष है। जिनके जीवन में सुस्ती, क्षरण, उदासीनता है उनको भी संकल्प से भरने वाला दिन है, क्योंकि आंतरिक शक्ति का समंजन यहां है। निश्चित तौर पर जब प्रकृति इतनी सुशोभन होगी, जीवन इतना सचेष्ट होगा तो संकल्प एवं उत्सव भी उतना ही रंगमय होगा। भाषा का निनाद भी उतना ही कलात्मक होगा। चैत्र में सिर्फ नए वर्ष का ही आगमन नहीं हुआ अपितु भारतीय समाज के महानायक राम का भी प्राकट्य हुआ। प्राचीन शब्दावली में 'लीला' का महत्व है। समय की अपनी लीला है। अंत करने के लिए एक शुरुआत करनी ही होती है। इसलिए काल की अवधारणा में आदि, अनादि, अंत और अनंत का महत्व है।

भारतीय नववर्ष हममें एक नई आत्मा, नई दृष्टि, पुरखों की धरोहर की सुभावना, संकल्पशीलता और विचारणा देता है। एक पुस्तक का खाली पृष्ठ और हमारी शुरुआत। पहला शब्द, प्रथम अध्याय। हम अपना शोधन करें कि क्या छोड़ना उचित है, क्या ग्रहण करना। अपनी गलतियों से सीखना बहुत आवश्यक है। स्वयं को बदले संसार में एक कदम बदलाव होगा। दुनिया में परिवर्तन होगा तो आप में होगा। यह अन्योन्याश्रित है। हम वह सकारात्मक चीजें करें जो पहले कभी नहीं किए तो यह भी एक नएपन का अंग होगा और सबसे महत्वपूर्ण बात की हम कुछ महत्वपूर्ण कर रहे होंगे। तो सबसे खास क्षण है वर्तमान। सारे कार्य 'वर्तमान' क्षण में ही किए जाते हैं। हम संकल्पपूर्ण ढंग से अपनी योजनाओं को अमल में लाएंगे तो वे शायद समय की छाती पर लकीर होंगी। बाकी तो दुनिया की हड़बड़ी, घबराहट में नष्ट हो जाएंगी। ऐसा भी हो सकता है कि अनेक लोग हर अकर्मण्यताओं की ढ़लान में डूब जाएं, यदि उन्होंने संकल्प की दृढ़ता नहीं दिखाई।

भारतीय नया वर्ष पुस्तक में एक अध्याय की तरह हमारे सामने खड़ा है और लिखित होने की प्रतीक्षा कर रहा है। हम लक्ष्य निर्धारित करके उस कथा को लिखने में मदद कर सकते हैं। पहला कदम हमारा कठिन होता है, लेकिन जब हम उसे प्रगति की धारणा में बदलने में समर्थ होते हैं तो पत्थर भी कनेर का फूल बन जाता है। नए साल में अपने पिछले वर्षों को धन्यवाद देना न भूलें, क्योंकि उन्होंने आपको आज तक पहुंचाने में सक्षम बनाया है। अतीत की सीढ़ियों के बिना आप भविष्य में नहीं पहुंच सकते। नए साल में आपको क्या चाहिए ? आपको एक सपने की आवश्यकता है और सकर्मक दिशा की। भारतीय नया साल कभी नहीं विगत होता, वह बस स्मृति में बदल जाता है।

साभार–दैनिक जागरण
दिनांक 6.4.2019

दुनिया की दृष्टि बदलने वाले विवेकानंद

समकालीन विश्व इतिहास में 11 सितंबर, 1893 का दिन एक युगांतकारी परिघटना का पड़ाव बना था। उस दिन शिकागो शहर में आयोजित विश्व धर्म सम्मेलन के मंच से स्वामी विवेकानंद ने भारतीय धर्म–संस्कृति का ऐसा शंखनाद किया कि सुनने वाले सम्मोहित होकर रह गए। उन श्रोताओं में जर्मन भाषाविद् और प्राच्य विद्या के मर्मज्ञ प्रोफेसर फ्रेडरिक मैक्समूलर और अल्बर्ट आइंस्टीन जैसे मूर्धन्य विज्ञानी भी थे। स्वामी जी के विचार सुनकर भारत को देखने की पश्चिमी विद्वानों की दृष्टि ही बदल गई कि जिसे वे जादू–टोना और सपेरों का देश समझते रहे, वह तो ज्ञान–विज्ञान, दर्शन और साहित्य की अविरल धारा को समेटे है। स्वामी विवेकानंद मानते थे कि, 'संसार भारत माता का अपार ऋणी है। यदि हम विश्व के सभी राष्ट्रों का तुलनात्मक अध्ययन करें तो पाते हैं कि विश्व में ऐसी कोई जाति नहीं है, जिसका संसार उतना ऋणी है, जितना वह हमारे भद्र हिंदू पूर्वजों का है।'..... ..इसी कड़ी में मैक्समूलर ने स्वामी जी को अपने यहां भोजन पर आमंत्रित किया। यह 28 मई, 1896 की तिथि थी। मैक्समूलर से घंटों शास्त्रार्थ हुआ।..... इस प्रकार विवेकानंद और मैक्समूलर का मिलन वास्तव में पूरब और पश्चिम का सेतुबंधन था।.....

.....मैक्समूलर ने तीन दशक से भी अधिक समय वेदों पर अध्ययन और शोध किया।..... .... यह पश्चिम में वैदिक ज्ञान की 'दिग्विजय यात्रा' थी। यह संपूर्ण यूरोप में वैदिक ज्ञान के प्रति आए पुनर्जागरण का उत्कर्ष था।..... .... भारत और भारतीय संस्कृति से उनके अनुराग की अभिव्यक्ति इन्हीं शब्दों में समझी जा सकती है, 'भारत आधुनिक विश्व का आध्यात्मिक पूर्वज है और जिस देश ने राम और कृष्ण को जन्म दिया, उसे गुलाम बनाना महापाप है।' ..... 'इंडियाः व्हाट इट कैन टीच अस' नामक पुस्तक में वह बताते हैं कि विश्व भारतवर्ष से क्या–क्या सीख सकता है ?..... यह मैक्समूलर ही थे जिन्होंने स्थापित किया कि हिब्रू नहीं, अपितु संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषा है और यूनानी या यहूदी नहीं, बल्कि हिंदू विश्व की प्राचीनतम जाति हैं।.....सर विलियम जोंस जैसे विद्वान भी इससे सहमति व्यक्त करते हुए कहते हैं, 'संस्कृत विश्व की सर्वाधिक पूर्ण भाषा है। यूनानी से भी अधिक परिपूर्ण तथा लैटिन से भी अधिक समृद्ध।.....यह भारत और उसकी संस्कृति के प्रति आकर्षण ही रहा कि उसने मैक्समूलर जैसे कई विद्वानों को प्रभावित किया। यह श्रृंखला बहुत लंबी है, जिनमें से तमाम यह मानते हैं कि गणित और विज्ञान हमने भारत से ही सीखा है। महात्मा बुद्ध के माध्यम से भारतीय विचार ईसाई मत में अभिव्यक्त हुए। इसी प्रकार ग्राम स्वराज, स्थानीय स्वशासन, लोक कल्याण और लोकतंत्र इत्यादि संकल्पनाएं सबकी गंगोत्री भारतवर्ष ही है .....।

–डा. विनोद कुमार तिवारी
(दै.जा. 11.09.21 से कुछ अंश)

हिन्दी कक्ष द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित दूरभाषः EPABX 7144

मुद्रकः सागर प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, नई दिल्ली। ई–मेलः sagarprinters@gmail.com